8

दिव्यनाम कीर्तन तथा उत्सव संप्रदाय कीर्तन

रचनाओं के ये प्रकार भागवत परंपरा अथवा संकीर्तन भजन पद्धति में मिलते हैं। अपनी रीति गौल कृति ''राग रत्न मालिका'' में संत त्यागराज दिव्यनाम कीर्तन की रचना के उद्देश्य बताते हैं,

''अपनी मुक्ति के एकमात्र साधन के रूप में मैं इन गीतों की रचना करता हूं।'' दिव्यनाम कीर्तन नामक समूह में 78 रचनायें हैं जो सामुहिक गायन के लिये हैं तथा सामान्यतया लंबक शैली, अर्थात् एक पल्लवी और समान मेलडी ढ़ांचे के कई चरणं युक्त हैं। शहाना में 'वंदनमु' और खरहरप्रिय में 'पहिरम' कुछ प्रचलित दिव्यनाम कीर्तन हैं।

उपासना के माध्यम से आराधना की धारणा भारत में प्राचीन परंपरा है। भगवान के आव्हान के लिये कई प्रक्रियायें अथवा उपचार हैं। वे विशेष रचनायें जो इन उपचारों के साथ गाने के लिये निर्धारित हैं, उत्सव संप्रदाय कीर्तन कहलाती हैं। इनकी संख्या 24 है जिनमें केवल भगवान विष्णु की महिमा का वर्णन करने वाला एक पद: चूर्णिका होता है। दिव्यनाम कीर्तनों की भांति ये भी पल्लवी और समान मेलडी युक्त कई चरणों युक्त सरल रचनायें हैं। यदुकुल कामभोजी में हेच्चरिकग रार' जैसी कुछ रचनायें इसका अपवाद हैं, जिनमें पल्लवी, अनुपल्लवी और चरण, तीन भाग होते हैं। कुरिन्जी में सीता कल्याण, मध्यमवती में नागुमोमु कुछ प्रचलित उत्सव संप्रदाय कीर्तन हैं।

उद्देश्य

इस पाठ के अभ्यास के पश्चात, विद्यार्थी:

- कीर्तनं की संरचना का वर्णन कर पायेग;
- भक्ति की अभिव्यक्ति का वर्णन कर पायेगा;
- कीर्तनं को पहचान पायेगा।

टिप्पणी

8.1 दिव्यनाम कीर्तन

रागं: सहाना

सहाना 28वें मेल हरिकांभोजी की जन्य राग है

आरोहनं- स रि$_2$ ग$_2$ म$_1$ प म$_1$ ध$_2$ नि$_1$ सं

अवरोहनं- सं ध$_2$ प म$_1$ ग$_2$ म$_1$ रि$_2$ स

वादी: ऋषभ

संवादी: धैवत

संचारं रि ग म प - प म ग म रि - रि ग रि स -

रि स नि स ध - ध नि स रि - रि ग म प म ध नि - रि̇ सं̇ नि̇ सं̇-

नि रि̇ सं̇ नि सं̇ ध- नि̇ ध̇ पं̇- प रि- रि ग म प म ध स नि ध प म

ग म रि- ग रि स

रागं: सहाना

तालं: आदि

पल्लवी

वंदनमु रघु नंदन सेतु
बंधन भक्त चंदन राम

अनुपल्लवी

श्रीतम नातो वतम ने
भे दम इति मोदम

चरणं

1. श्री राम ब्रि चरम ब्रोव
   बरम राय बरम राम
2. विंतिनी नम्मु कोंतिनी शर
   नंतिनी रमंतिनी राम
3. ओदनु भक्ति वीदनु नोरुल
   वेदनु नीवदनु राम

टिप्पणी

4. कम्मानी विदमिम्मानी वरमु
   कोम्मानी पलुक रम्मानी - राम

5. ज्ञाम नी कदयम इक
   हेयम मुनिगेयम राम

6. क्षेममु दिव्य धाममु नित्य
   नेममु राम नमामु राम

7. वेगर करुण सागर श्री
   त्यागराज हृदय जर राम

रागं: सहाना **तालं: आदि**

रचयिता: त्यागराज

आरोहनं- स रि ग म प म ध नि स

अवरोहनं- सं ध प म ग म रि स

पल्लवी

(1) ॥ ,सरिग, गरिरि,रि,,रि, । रि , रि , ग , म । प , , , , , प , ॥
वं - - द न मु र घु नं- द न से
॥पमम, पध, पमगमरि,,रि, । रि, ग रि रि म ग रि । स , य प म ग म ॥
तु - बं - - ध न - भक्त चं - - द न रा

(2) ॥ रि स --वही-- रि , रि , नि ध । प ध प, नि रि ॥
म- र घु नं- - द न से
॥ सरि नि स प,, गमरि,,रि, । रि, ग रि रि म ग रि स, य प म ग म ॥
तु - बं - धन - - भक्त चं - -द न- -

(3) ॥ रि स --वही-- । --वही-- ॥
॥ --वही-- रा, । नि ध प ध प म प म ग म ग रि रि ग ग रि ॥
भक्त -- चं--द--न--रा--
॥ स नि

(1) ॥ य नि , , , , ध , प , , प , , म प म , ध नि स , स नि ध स , य य य ॥
श्री त म ना तो - - व - - त - म - ने

टिप्पणी

॥ य नि, रि , स , नि स ध , प स नि ध प, रि ग म प म ग म रि, रि ग ग रि ॥
भे - द म - - इ - ति - मो - - द म - - रा- म
॥ स नि ध रि स स नि , , , ध, य प, य प ध प ध म प म , --वही--
श्री त - म ना - - तो - -
॥ य नि स रि ग ग नि नि स ध , ध स नि ध प , रि ग म प ध प
भे - - द म - - इ - ति - मो - - द -
प म म ग रि ग ग रि ॥ स
- - म - - रा- म-

शेष चरण इसी प्रकार

8.2 उत्सव संप्रदाय कीर्तन

रागं मध्यवती

22वें मेल मध्यवती की जन्य राग

आरोहनं- स $रि_2$ $म_1$ प $नि_1$ सं

अवरोहनं- सं $नि_1$ प $म_1$ $रि_2$ स

वादी: रे

संवादी: प

संचारं - रि- रि म प म रि स - नि स रि स नि प- नि स रि
रि म प- म नि प प म म रि स- रि म प नि - रि स नि स- नि प-
नि स रि - रि म प म रि स- नि स रि स नि प- म नि प प म रि-
रि रि म म नि नि रि रि स नि प म रि- रि स नि प नि स

रागं मध्यवती **तालं: आदि**

रचयिता: त्यागराज

पल्लवी

नागमोमु गलवानी न मनोरहुनी
ज गमेलु शूरुनी जनकी वरुणी

टिप्पणी

चरणं-I

देवादि देवुनी दिव्य सुंदरुनी

श्री वासुदेवुनी सेत रघुवनी

चरणं-II

सुगनान निधि नि सोम सूर्य लोचनुनी

अज्ञान तममु अनचु भास्करुनी

चरणं-III

निर्मला करुणी निखी तग हा हरुणी

धर्मादि मोक्षंबु दया चेयु घनुनी

चरणं-IV

बोधतु पलुमरु पूजिन्चुनी न-

राधिन्तु श्री त्यागराज सन्नुतिनी

पल्लवी

(1) ॥ नि स , रि , रि रि , रि रि , रि म रि स ,

ना ग मो मु ग ल वा - - नी

स , रि , स नि प , नि स रि स रि , ॥

न म - नो ह रु नी -

॥ रि म , प , , प , म प म रि रि म रि स

ज ग मे लु शूरु नी - -

नि स रि , म , म रि रि म प रि म रि स ॥

ज - न - की वरुणी - -

(2) ॥ नि स रि स रि स रि, रि प म रि रि म रि स

नाग मो - मु गलवा - नी

स , , स रि स नि प , नि स रि स रि , ॥

न - म - नो ह रु नी -

--वही-- --वही--

शेष भाग इसी प्रकार

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न

1. त्यागराज स्वामी किस कृति में दिव्यनाम कीर्तन के विषय में बताते हैं।
2. वे रचनायें क्या कहलाती हैं जो भगवान को अर्पित उपचारों का वर्णन करती हैं?
3. किन्हीं दो उत्सव संप्रदाय कीर्तनों का उल्लेख करें।
4. सहाना किस मेल की जन्य राग है?

निर्देशित कार्य कलाप

1. कीर्तन की स्वर लिपि के अनुसार सहाना के संचार को अपने आप लिखें।
2. उनके राग, ताल और उपचारों के उल्लेख युक्त साहित्य सहित सभी उत्सव संप्रदाय कीर्तनों को एकत्र करें।